❑कहाणी

गाय कठै बांधूं

रामस्वरूप किसान

कहाणीकार परिचै

14 अगस्त, 1952 नै हनुमानगढ़ जिलै रै परलीका गांव में जलम्या रामस्वरूप किसान प्रतिभासाली अर मेहनती साहित्यकार है। वांरै अठै सिरजण अर मैणत अेकमेक है। बै पसीनै री पाणत सूं खेती रै साथै-साथै कविता-कहाणी री साख निपजावै। साहित्य मांय ई किसान खेती दांई पचै। किसान आपरी रचनावां सूं पुख्ता करै कै वै स्रमसील वर्ग नैं दूर सूं देखणवाळा नीं होयनै खुद बीं रा अणटूट हिस्सा है। इण वास्तै वांरी रचनावां में भोग्योड़ौ जथारथ प्रगट होयौ है। वै आपरी कहाणियां में ग्रामीण जीवण रौ जबरौ दोहन कर्‌यौ है। ग्रामीण जनजीवण अर संस्कृति माथै वांरी जबरी पकड़ है। आपरै लेखन सूं सामाजिक अर आर्थिक बदळाव रा पखधर किसान आपरै चिंतन नैं कलात्मक रूप देवण मांय माहिर है। आंरी कहाणियां पठनीयता रै गुणां सूं लबालब है।

किसान रा अजै लग 'हिवड़ै उपजी पीड़', 'आ बैठ बात करां' अर 'कूक्यो घणो कबीर' कविता-संग्रै, 'हाडाखोड़ी', 'तीखी धार' अर 'बारीक बात' कहाणी संग्रै, 'सपनै रो सपनो' लघुकथा संग्रै अर 'राती कणेर' नांव सूं रवीन्द्रनाथ टैगोर रै बांग्ला नाटक 'रक्त करबी' रै राजस्थानी अनुवाद री पोथी छप चुकी है। 'गांव की गली-गली' वांरी हिंदी में लांबी कविता री पोथी है। किसान कथा प्रधान राजस्थानी तिमाही पत्रिका 'कथेसर' रा संपादक है।

किसान नैं कहाणी 'दलाल' माथै कथा संस्था दिल्ली रौ कथा-पुरस्कार, 'हाडाखोड़ी' कहाणी-संग्रै माथै ज्ञान भारती कोटा रो गौरीशंकर कमलेश पुरस्कार अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रौ मुरलीधर व्यास 'राजस्थानी' कथा पुरस्कार, 'राती कणेर' माथै साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ अनुवाद पुरस्कार समेत मोकळा मान-सम्मान मिल चुक्या है। किसान री रचनावां रौ केई बीजी भासावां में अनुवाद पण होय चुक्यौ है। किसान रौ कविता-संग्रै 'आ बैठ बात करां' जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर अर 'दलाल' कहाणी रौ अंग्रेजी अनुवाद 'द ब्रोकर' नांव सूं क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बैंगलोर (कर्नाटक) अर महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी, कोट्टायम (केरल) रै पाठ्यक्रम में सामल है।

पाठ परिचै

'गाय कठै बांधूं' कहाणी किसान री कहाणी-कला रौ नायाब नमूनौ है। आ कहाणी किसान रै 'हाडाखोड़ी' कहाणी-संग्रै सूं सामल करीजी है। संस्मरणात्मक सैली में रचीजी इण कहाणी में दो वरगां री मनगत रौ खुलासौ होयौ है। अेक कानी ग्रामीण किसान है, जिकौ गाय सारू 'गावड़ी' अर 'ढांढी' सरीखा सबद बरतै, पण वै सबद आत्मीयता सूं भर्‌या-पूरा है। मजबूरी में जद उणनैं गाय बेचणी पड़ै तौ गाय टुरांवती वेळा वौ गळगळौ होय जावै अर यूं लागै जाणै वौ घर सूं बेटी नै विदा कर रैयौ है। दूजी कानी बाजारू मानसिकता रा लोग है, जिकां सारू गाय सेवा री नीं, फगत पूजा री वस्तु है। गाय री पूजा होवती देख बाजारू लोगां सारू कहाणी नायक रै मन में सरधा जागै, पण असलियत उजागर होवतां ई उणरै पगां तळै सूं जमीं खिसक जावै। गाय सारू साचौ हेत राखणवाळै अेक किसान री पीड़ नैं प्रगटावती आ अेक मनोवैग्यानिक कहाणी है। कहाणी में जबरी पठनीयता है, साथै ई मुहावरां अर कहावतां रौ सरस बरताव इणनैं बेजोड़ बणावै।

गाय कठै बांधूं

सै'र मांय दुधारू पसुवां रौ मेळौ लागै। हजारूं गाय-भैंस्यां बिकण सारू आवै। गोरती गाय त्यारी ब्यायोड़ी ही। हाथ तंग हौ। गाय ई दीखी। म्हैं गाय-बाछरू लेयनै बेगौ ई मेळै आयग्यौ। क्यूंकै म्हारौ गांव सै'र रै जाबक ई नजीक हौ।

इसी सूत बैठी, गाय जावतां पाण बिकगी। हीयै रौ आंधौ अर गांठड़ी रौ पूरौ मिलग्यौ। म्हैं तीन हजार मांग्या। उण पकड़ा दिया। इत्तौ ऊंतावळौ सौदौ तौ कदैई नीं बण्यौ। म्हारौ मन मांय ई मांय नाचण लागग्यौ। सोच्यौ, स्यात कोई पूगतौ आदमी है। पीसै नैं बाळ बरोबर ई नीं समझै। साथै गिरगराट ई होयौ। मोल में ऊकग्यौ बेलीड़ा! च्यार हजार मांग लेवतौ तौ कित्तौ ठीक रैवतौ। पण औ गिरगराट हुळस पर छावै इण सूं पैलां ई म्हैं सावचेत होयग्यौ। गिरगराट नैं बारै धक नै मन रा किंवाड़ मूंद लिया। भळै लाडू-सा फूटण लागग्या। दो हजार री गावड़ी अर तीन हजार बांट लिया। आछौ टूठ्यौ रामजी! आज तौ किणी भलै रा ई दरसण होया है। म्हैं रिपिया आछी तरियां गिण्या अर गोजै में घाल लिया। जद म्हैं पचास रिपिया धारणी साथै गाय-बाछरू उणनैं पकड़ावण लाग्यौ तौ वौ बोल्यौ, ''थोड़ा फोड़ा और घालसूं।''

''कांई?'' म्हैं चौकन्नौ होयौ।

''गाय म्हारै घर तांई पूगती करणी पड़सी। म्हनैं थोड़ौ डर लागै। क्यूंकै गाय औपरी है।''

''सूधी भौत है। सिर ई कोनी हलावै।'' म्हैं जी-टिकाई सारू कैयौ।

''फेरूं ई औपरापणा तौ कर ई सकै। थे डरौ नां। घर दूर कोनी। थांरौ गुण कोनी भूलूं।''

उणरा छेकड़ला सबद सुणनै म्हैं नट नीं सक्यौ। अेक हाथ में गाय री सांकळ अर दूजै में बाछरू री जेवड़ी पकड़नै उणरै लारै-लारै चाल पड़्यौ। वौ छव फुटै डील रौ धणी। गोडां चूमतौ कुड़तौ। झीणी धोती मांयकर पट्टैदार कच्छौ दीसै। काळै बूंटां में धोळी जराब आंख-सी काढै। आंख्यां पर धूप रौ चसमौ। औ रंग-ढंग देखनै म्हैं बूझ्यां बिनां नीं रैय सक्यौ, ''कांई काम करौ हौ थे?''

''म्हैं तौ सेठ रौ मुनीम हूं।''

''किसै सेठ रा?''

म्हारै इण सवाल रौ पडूत्तर गावड़ी खायगी। वा अेक ट्रकड़ै सूं बिदकनै सांकळ छुटागी। म्हैं संकट मांय पड़ग्यौ। तिल जित्ती हुयगी। गावड़ी दो ई डाकां में सड़क रै दूजै पसवाड़ै जाय पूगी। म्हैं बाछरू पकड़्यां उरलै पाळियै धूजूं तौ गावड़ी परलै पाळियै रांभै। म्हारै बिचाळै मसीनर्‌यां री अेक चालती भींत-सी तण्योड़ी। गाय, बाछरू कन्नै आवणौ चावै। पण सड़क कीकर लांघै? साधनां रौ खाळ-सो चालै हौ सड़क पर। वा चली तौ गयी बीं पासै, पण इब इन्नै आवणौ मौत होयग्यौ। वा फुटपाथ पर मसीनां रै बरोबर भाजै अर पाछी ई सागण जगां आयनै रांभण लागै। म्हारी ज्यान नै मालौ मंडग्यौ। बाछरू ई ताळ-ताळ कूदै। म्हारै हाथां सूं निकळ'र हेरण बणनौ चावै। म्हैं पसीनै सूं हळाडोब होयग्यौ। सोच्यौ, आज तौ आछा दोजख में फंस्या। जाण-बूझ अळबाद खरीदली। गावड़ी पकड़ायनै गेलौ नापतौ तौ कित्तौ ठीक रैवतौ। ठंडै-ठंडै घरां पूग जांवतौ। आज तौ आछौ कुड़कै में पग दियौ। मेळै मांय कित्ता डांगर बिकै। कुण कीं रै घरां पुगायनै आवै। म्हनै खुद पर झुंझळ-सी आवण लागी। म्हैं सैयोग सारू मुनीमड़ै नैं हेलौ मार्‌यौ, जकौ कड़तू रै हाथ लगायां अळगौ खड़्यौ हौ। पण वौ लोवै नीं आयौ। बोल्यौ, ''म्हनैं तौ गावड़ी मारै।''

''बाछरू तौ पकड़ सकौ हौ।'' म्हैं कैयौ।

उण धूजतै-धूजतै बाछरू री जेवड़ी पकड़ली। म्हैं सड़क रै दूजै पाळियै गयौ अर गावड़ी नै ओखी-सोखी पकड़नै ल्यायौ ई हौ कै दूजी अणहोणी देखनै म्हारौ काळजौ जगां छोडग्यौ। अचाणचक बाछरू अेक जीपड़ी रै आगै

पवन बणग्यौ। गावड़ी बाछरू री भौत हेजाळू ही। वा आपरै बच्चै लारै रेल बणगी। सांकळ म्हारै हाथ में ही। म्हैं और काठी पकड़ली। म्हारी भाज गावड़ी आपरी भाज रै बरोबर बणाली। म्हैं उणरै लारै उड्यौ ई बगूं। सगती गाय री अर धीजौ म्हारौ। म्हारा पग कठै ई टिकै तौ कठै ई नीं। आखी सड़क रौ ध्यान म्हारै पर। सगळौ फुटपाथ भींतां चिपग्यौ। म्हारै कानां भणकार पड़ी, ''अरे गिंवार, मरावैलौ। अरे मूरख! इयां के करै है?''

अेक बाबू ताळी पीटनै हांस्यौ, ''अरे औ कठै सूं आय बड़्यौ अठै?''

आं बाणां सूं म्हारौ काळजौ चालणी होयग्यौ। पण म्हनै बोलण नै कठै फोरौ। अेक किलोमीटर री बेओसाण दौड़ रै पछै म्हैं बाछरू नै काबू कर सक्यौ। म्हारी कोडी चकीजगी। गावड़ी ई हांफगी। वा बाछरू नै चाटण लागगी। म्हारौ दम टिक्यौ। इतराक में मुनीम आयग्यौ। म्हैं सांस खींच'र बूझ्यौ, ''कित्ती'क दूर और चालणौ पड़सी?''

''चालणौ तौ थोड़ौ ई पड़तौ, पण इब तौ खासा ई चालणौ पड़सी। आपां नै आ गावड़ी दूजी सड़क माथै ठरड़ ल्यायी। जीपड़ीआळै निरभाग बाछरू रै मांय ई ल्याय मारी जीपड़ी। बस, बाळ-बाळ ई बचग्या। नीं तो मारग्या जावता। आज तौ भाग ई भलेरा हा।''

उण आपरौ पख पाळण सारू खुद री कमी जीपड़ीआळै रै माथै मंढदी। म्हनैं उणरी झूठ पर रीस-सी आयी।

म्हे उणी सड़क पर पूठा मुड़्या। सागण जगां पूग्या। जठै सूं गाय चौफाळियां होयी ही। भळै वौ आगै-आगै अर म्हैं लारै-लारै। गळी पर गळी। नुक्कड़ पर नुक्कड़। चौरावां पर चौरावा लारै रैंवता जावै हा। पण घर आवणै में नीं आवै। झाळ उठी, मुनीमड़ै रै थोबै पर मारूं। साळा, थूं कैवै हो नीं, घर लोवै ई है। क्यूं झांसौ दियौ म्हनैं। पण सगळी गिटग्यौ। गावड़ी नै ठरड़तौ रैयौ। उणमें चिमक बड़गी। बा लारै तणावै। म्हैं सांकळ रै बळ आगै खींचूं। बाछरू ई पग रोपै। खींचूं जणां नौ-नौ ताळ कूदै। छोळां चढै। कदै गावड़ी रै डावै तौ कदैई जींवणै आवै। इसी खैंचाताण में तौ कदैई नीं फंस्यौ। आछौ घरड़घसियौ होयौ। सांकळ अर जेवड़ी हाथां में गडण लागगी। भळै सोच्यौ, देख तेरी... घर होग्यौ कै अमरीका! कित्ता मोड़ लांघग्यौ, आवणै में नीं आवै। आज तौ आछा कान कतरया इण मुनीमड़ै। आछी फाक्यां चढ्यौ इण री। ठा नीं कठै लेजायनै मारैलौ। अेकर तौ इसी रीस आई कै सांकळ रौ दूजौ सिरौ मुनीमड़ै रै गळै में घालनै गावड़ी रै गदगदी करद्यूं, पण आ रीस पीड़ भरयै सवाल रै बंट निकळगी, ''इब तौ थोड़ौ ई चालणौ होसी?''

''बस, इब तो ठिकाणौ आ ई लियौ मानौ।'' मुनीम धोळै बाळां में आंगळ्यां फेरतौ बोल्यौ।

''थे थोड़ी गावड़ी नैं टोरौ दिखाण।''

वौ डरतौ-डरतौ गावड़ी नै टोरण लागग्यौ। म्हैं सोच्यौ, औ काम तौ गळत भुळायौ मुनीमड़ै नैं। जे गावड़ी लात फटकार दी तौ? औ सै'र है बावळा! लेणै रा देणा पड़ जासी। लोग पीसा पाछा खोसनै ढांढी कर देसी पूठी। म्हैं बोल्यौ, ''आगै ई आ ज्यावौ मुनीमजी! म्हैं गळी कोनी जाणूं।''

''इब तौ आ ई ग्यौ घर। बा दीखै सामनै नुक्कड़आळी हेली।''

म्हारी ओरी-सी ढळगी। अेक लांबो सिसकारौ आपौ-आप भरीजग्यौ।

म्हैं गाय-बाछरू पकड़्यां अेक बंगलै रै बारणै आगै चेताचूक-सो खड़्यौ हौ। मुनीम बंगलै रै भीतर बड़ग्यौ। म्हैं उणरी बाट जोवूं। म्हनैं अचाणचक लाग्यौ जाणै म्हैं गाय रौ बिकवाळ कोनी। गंगा-घाट रौ कोई मंगतौ हूं। गाय रै मिस लोगां रै बारणै-बारणै भीख मांगतौ फिरूं। म्हनै खुद सूं घिन होवण लागी। पण म्हैं करड़ौ भौत हौ। सगळी हीणतावां पाणी ज्यूं पीयग्यौ। माथै रौ पसीनौ पूंछ्यौ अर चैरै पर भळै गुमेज उपजायौ। इतराक में मुनीम आयग्यौ। केई ताळ सूं अेक सवाल हिवड़ै नै सालै हौ। म्हैं ताचकनै बूझ्यौ, ''औ बंगलौ थारौ ई है?''

म्हारौ सवाल बायरै रळग्यौ। पडूत्तर री जगां मुनीम आदेस दियौ, ''आ भई। भीतर लेय आ गाय-बाछरू।''

म्हैं आदेस नैं आदेस मान्यौ। गाय-बाछरू बंगलै रै 'लॉन' में लेय आयौ। इन्नै-बिन्नै ख्यांत्यौ। डांगर-ढोरां सारू अठै कठैई जगां कोनी दीखी। बंगलौ! पांच तारा होटल जिसौ बंगलौ अर इण मांय अेक मुरदी-सी गाय बंधै! म्हारै मन कोनी मानी। धूजणी-सी छूटगी। अेक अणजाण्यौ डर मलोमल काळजै छावण लाग्यौ। अनेकूं सवाल म्हारै साम्हीं दांत काढण लाग्या। म्हैं मुनीम सूं पूछ्यौ, ''गाय कठै बांधूं?''

''थोड़ी ताळ पकड़्यां राखौ। म्हैं सेठजी नै बुलायनै लावूं।''

'सेठजी' सबद सुणतां ई म्हारौ अेक सवाल तौ सुळझग्यौ कै औ बंगलौ मुनीम रौ नीं, किणी मोटै सेठ रौ है अर आ गाय सेठ मंगवाई है। पण इण सुळझाव रै 'साइड इफैक्ट' सूं केई और सवाल खड़्या होयग्या। पैलौ तौ औ कै इत्तौ मोटौ सेठ गावड़ी रौ हड़दौ करै ई क्यूं? जे चावै तौ रोजीना कूंटल दूध मोल लेय सकै। अर जे गाय रौ चाव ई होवै तौ कम सूं कम बीस-पच्चीस हजार री आछी नसल री खरीदै। कै फेर कामल गायां री डैरी लगावै। म्हारै भीतर आ दोगाचींती चालै ही, इतराक में सेठ रौ आखौ परिवार आयनै गाय रा इत्ता कोड करण लाग्यौ कै मत बूझौ बात। सेठ-सेठाणी गाय रै पगां री धोख खावण लाग्या। म्हनै अंचभौ-सो आयौ। बीनण्यां भाजनै आरती रौ थाळ ल्यायी। थाळ में सोनै रौ अेक हार हौ। म्हैं सोच्यौ, पूगता आदमी नुंवै-नुंवै पसु नैं सोनौ सुंघायनै खूंटै बांधता होसी। क्यूंकै म्हारै अठै चांदी सुंघावण रौ रिवाज है। पण सेठाणी तो गाय रै माथै रोळी रौ टीकौ काढनै इण हार नैं उणरै गळै में घाल दियौ। सेठ रा बेटा-बेटी अर पोता-पोती गाय रै लिपट-लिपट कोड करण लागग्या।

गाय सारू आं रौ अणूतौ प्यार देखनै म्हारी रीस ई माठी पड़गी। गाय पुगावण रा फोड़ा भूलीजण लागग्या। म्हनै आनंद-सो आवण लाग्यौ। जद गाय छिंगास करण लागी, सेठाणी भाजनै कांसी रौ कचोळौ मांड दियौ। आखै कड़ूंबै गौ-मूत रौ टीकौ काढ्यौ। अेक जणी अचाणचक गावड़ी आगै लाडुवां रौ टोकरियौ छोड्यौ तौ म्हारा तिराण फाटग्या। गावड़ी लाडुवां पर टूट पड़ी। म्हनैं गुड़ याद आयग्यौ। क्यूंकै म्हे लोग नुंवै-नुंवै पसु नै गुड़ धामां। गुड़ री जगां लाडू! इयां कै पाणी मांग्यां घी मिलै। आछी ताबै आई गावड़ी रै। आछा भाग जाग्या ढांढी रा। देख, राजा-घर बंधी है। स्यात लारलै भो रा आडा आवै। सेठ गाय रै डील पर खाज करण लागग्यौ। भळै म्हारै कानी मुळकनै बोल्यौ, ''मारै कोनी के?''

''नां-नां, भौत सूधी है। देवता बरगी। बारह-मासी धीणौ है ईं रौ। टाबर आसीस देवैला। थारै सागै दगौ थोड़ौ ई करूं।'' म्हारी इण गारंटी पर सेठ भळै मुळक्यौ। म्हनैं लाग्यौ, सेठ म्हारै पर मुळक्यौ है। म्हैं इणरौ अरथ सोधूं इतराक में सेठाणी आयी अर गाय नैं अेक घणमोली पळपळांवती चूंदड़ी ओढा दी। गळै में हार अर डील पर चूंदड़ी। औ नजारौ देखनै म्हारा रूं फाटग्या। म्हैं गळगळौ-सो होयग्यौ। म्हनै वा विदा होंवती बेटी ज्यूं लखाई।

इब सेठां सारू म्हारी चींत बदळी। आज सूं पैलां म्हारी दीठ में औ वरग गरीबां रौ खून चूसणियौ जोंक सरीखौ हौ। हर बात नैं मुनाफै री ताकड़ी तोलणियौ, पण आज म्हारी आंख्यां खुलगी। सोच्यौ, म्हारौ खास पेसौ पसु पाळणौ। दिन-रात पसुवां में रैवणौ। पण वां सारू इत्तौ हेत तौ म्हारै ई हिवड़ै कोनी। हेत तौ दूर, मामूली चूक पर ई डांग ठोकां। पण अै लोग। धन-धन है आं री जामण नैं। लखदाद है आं सेठां नैं। पसुवां सारू कित्तौ हेत है आं रै हिवड़ै। जद पसु ई आं नै इत्ता आछा लागै तो मिनख? आं रै काळजै री कोर है मिनख। अै लोग म्हां सूं भौत आछा है। इत्ता दिन म्हैं अंधारै में हो। बरत्यां बेरौ लागै आदमी रौ।

सोचतां-सोचतां म्हारी आंख्यां आली होयगी। म्हैं खुद नै धिक्कारण लाग्यौ, लाणत है म्हारी सोच नैं। आं दयालू अर हेताळू लोगां नै म्हैं सोसक मानतौ आयौ हूं। म्हनैं हर सेठ रै खूंटै गाय बंधी दीखी। अर हर गाय रै आगै दीख्यौ लाडुवां रौ टोकरियौ। म्हैं ऊंडी सोच मांय डूब्योड़ौ हौ। अचाणचक म्हारै हाथ सूं अेक दूजै हाथ गाय री सांकळ खोसली। साम्हीं देख्यौ तौ पगां तळै सूं जमीन निकळगी।

गळै में जनेऊ अर माथै पर टीकैआळौ अेक आदमी गाय री सांकळ झाल्यां खड़्यौ हौ। दूजी कानी सेठ मुनीम नैं आदेस दियौ, ''जा, पुरोहितजी रै खूंटै गाय बंधाइया।''

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

गाय-बाछरू =गाय-बाछड़ौ। सूत बैठी=संजोग होयौ। धारणी=बिक्योड़ै पसु रौ मोल चुकायां पछै मामूली-सी रकम पाछी मोड़ण रो अेक रिवाज। फोड़ा=परेसानी। औपरी=अणजाण। पाळियै=किनारै। चालणी=छलनी। रांभणौ=गाय रै बोलणै री क्रिया। ताळ-ताळ=ऊभो मिनख हाथ ऊंचा करै जितरी ऊंचाई। हळाडोब=तरबतर। अळबाद=मुसीबत। लोवै=नजदीक। ठरड़ ल्यायी=घींसनै लेय आयी। चौफाळियां=च्यारू पगां नै अेक साथै ऊंचाय-ऊंचायनै भाजणै री क्रिया। बिकवाळ=बेचण वाळौ। ख्यांत्यौ=देख्यौ। हड़दौ=काम रौ अतिरिक्त बोझ। कामल=योग्य। दोगाचींती=दुविधा। छिंगास=गोमूत्र। कचोळौ=बाटकौ। ढांढी=गाय। बेरौ=पतौ। खोसली=छीन ली। बंधाइया=बंधवायनै आव।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामस्वरूप किसान जिण पत्रिका रा संपादक है, उणरौ नांव कांई है ?

   (अ) कथेसर (ब) अपरंच

   (स) माणक (द) राजस्थली

   ( )

2. हियै रौ आंधौ अर गांठड़ी रौ पूरौ मिलग्यौ, कुण ?

   (अ) सेठ (ब) सेठ रौ छोरौ

   (स) मुनीम (द) पसुपालक

   ( )

3. गाय रा कित्ता रिपिया बंट्या ?

   (अ) अेक हजार (ब) दो हजार

   (स) तीन हजार (द) चार हजार

   ( )

4. मुनीम गाय लेयनै कठै गयौ ?

   (अ) सेठ रै खेत में (ब) सेठ रै बाड़ै में

   (स) सेठ री दुकान आगै (द) सेठ रै बंगलै माथै

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामस्वरूप किसान रा कहाणी संग्रै कुण-कुणसा है ?
2. कहाणी 'गाय कठै बांधूं' कुणसै कहाणी-संग्रै में सामल है ?
3. 'गाय कठै बांधूं' कहाणी किण सैली में लिख्योड़ी है ?
4. कहाणी-नायक गाय क्यूं बेची ?
5. गाय किणसूं बिदकनै सांकळ छुटायगी ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामस्वरूप किसान री खास-खास कृतियां रा नांव लिखौ।
2. मुनीम रै डील-डोळ अर पहनावै रौ वरणाव लेखक किण भांत करयौ है?
3. कहाणी-नायक रै मन में लाडू-सा कीकर फूटण लाग्या? खुलासौ करौ।
4. 'धारणी' रौ कांई मतलब है? लेखक धारणी रा कित्ता रिपिया छोड्या?
5. ''आं बाणां सूं म्हारौ काळजौ चालणी होयग्यौ।'' बै बाण कुणसा हा?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'गाय कठै बांधूं' कहाणी री मूळ संवेदना आपरै सबदां मांय लिखौ।
2. ''रामस्वरूप किसान री कहाणी 'गाय कठै बांधूं' कहाणी-कला रौ नायाब नमूनौ है।'' खुलासौ करौ।
3. कथा तत्वां रै आधार माथै 'गाय कठै बांधूं' कहाणी री कूंत करौ।
4. सेठ रै बंगलै माथै गाय रा कोड किण भांत हुया? विस्तार सूं लिखौ।
5. इण कहाणी रै आधार माथै खुलासौ करौ कै गाय सारू साचौ हेत किणरै मन में हौ अर कियां?

नीचै दिरीज्या गद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. इसी सूत बैठी, गाय जावतां पाण बिकगी। हीयै रौ आंधौ अर गांठड़ी रौ पूरौ मिलग्यौ। म्हैं तीन हजार मांग्या। उण पकड़ा दिया। इत्तौ ऊंतावळौ सौदौ तौ कदैई नीं बण्यौ। म्हारौ मन मांय ई मांय नाचण लागग्यौ। सोच्यौ, स्यात कोई पूगतौ आदमी है।

2. उण धूजतै-धूजतै बाछरू री जेवड़ी पकड़ली। म्हैं सड़क रै दूजै पाळियै गयौ अर गावड़ी नै ओखी-सोखी पकड़नै ल्यायौ ई हौ कै दूजी अणहोणी देखनै म्हारौ काळजौ जगां छोडग्यौ। अचाणचक बाछरू अेक जीपड़ी रै आगै पवन बणग्यौ। गावड़ी बाछरू री भौत हेजाळू ही। वा आपरै बच्चै लारै रेल बणगी।

3. म्हैं गाय-बाछरू पकड़्यां अेक बंगलै रै बारणै आगै चेताचूक-सो खड़्यौ हौ। मुनीम बंगलै रै भीतर बड़ग्यौ। म्हैं उणरी बाट जोवूं। म्हनैं अचाणचक लाग्यौ जाणै म्हैं गाय रौ बिकवाळ कोनी। गंगा-घाट रौ कोई मंगतौ हूं। गाय रै मिस लोगां रै बारणै-बारणै भीख मांगतौ फिरूं। म्हनै खुद सूं घिन होवण लागी।

मुहावरा अर वांरा अरथ

1. हीयै रौ आंधौ अर गांठड़ी रौ पूरौ	—	बिना सोच्यै-बिच्यारै खरच करण वाळौ।
2. लाडू-सा फूटणा	—	घणौ हरख होवणौ।
3. तिल जित्ती होवणौ	—	संकट में पड़णौ।
4. कुड़कै में पग देवणौ	—	जाण-बूझनै आफत मोलावणी।
5. कोडी चकीजणौ	—	दम भरीजणौ।
6. ओरी-सी ढळणौ	—	आराम आवणौ।
7. तिराण फाटणा	—	आंख्यां फाटणौ, घणौ अचरज होवणौ।
8. हेरण बणनौ	—	भाज जावणौ।
9. पाणी मांग्यां घी मिलणौ	—	छोटी-सी मांग माथै घणौ मिलणौ।